Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2021: 7.278, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, AUG-SEPT, 2022, VOL-10/53

सामाजिक समावेशन : बुनियादी विद्यालय के विशेष संदर्भ में

गणेश शुक्ल[1] & आचार्य आशीष श्रीवास्तव[2]

[1]शोध छात्र, शैक्षिक अध्ययन विभाग

[2]संकायाध्यक्ष एवं विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, पूर्वी चंपारण, बिहार

Paper Received On: 25 SEPTEMBER 2022
Peer Reviewed On: 30 SEPTEMBER 2022
Published On: 1 OCTOBER 2022

Abstract

शिक्षा किसी भी समाज में चलने वाली सामाजिक प्रक्रिया है| जिसमे मनुष्य की आंतरिक शक्तियों का विकास एवं व्यवहार परिस्कृत होता है | गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सामाजिक एकता और सामाजिक समानता के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण है| शिक्षा एक स्थायी समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है| शिक्षा सहिष्णुता को प्रोत्साहित करने के साथ- साथ विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाने के दिशा में महत्वपूर्ण कार्य करती है| गाँधी की बुनियादी शिक्षा विद्यार्थियों को इस प्रकार से तैयार करती है कि अपने जीवन में आने वाले चुनौतियों का सामना कर सके | जिसमे मनुष्य में मानवता, जड़ो से जुडाव, अतीत से आधुनिकता की तरफ ले जाकर भारतीय छात्रों को वैश्विक पटल पर स्थापित करना| वस्तुत विद्यालय वह स्थान होता है जहा विभिन्न धर्म,वर्ण, रंग, रूप अथवा यह कहा जा सकता है कि कई संस्कृतियों का मिलाप होता है | अत एक शिक्षक को भी विभिन्न संस्कृतियों का दर्पण होना चाहिए तभी वह आदर्श रूप में बहु सांस्कृतिक कक्षा कक्ष को तैयार करने में सफल होगा| इस शोध पत्र में बुनियादी विद्यालय विभिन्न सामाजिक संस्कृतियों एवं मूल्यों को एक विद्यालय के रूप में उसके संरक्षण एव सामाजिक समावेशन में कैसे वर्तमान समय में प्रासंगिक हो सकता है, इस तथ्य पर प्रकाश डाला गया है|

मुख्य शब्द : *बुनियादी विद्यालय , सामाजिक समावेशन,*

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

Scholarly Research Journal's* is licensed Based on a work at *www.srjis.com

प्रस्तावना – राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा 2005 के अनुसार समावेशन शब्द का अपने आप में कुछ खास अर्थ नही होता है समावेशन के चारो ओर जो वैचारिक, दार्शनिक, सामाजिक और शैक्षिक ढाचा होता है, वही समावेशन को परिभाषित करता है समावेशन की प्रक्रिया में बच्चो को न केवल लोकतंत्र मे भागीदारी के लिए सक्षम बनाता है अंतर्क्रिया करना भी समान रूप से महत्वपूर्ण है | मानवीय मूल्यों के विकास के महत्त्व के संदर्भ में ऐसे मूल्यों को प्राथमिकता मिलनी चाहिए जिसमे समाज और देश का कल्याण निहित हो | महात्मा गाँधी जी समाजोपयोगी मानव मूल्यों के महान समर्थक थे, उनका इस मत में गहरा विश्वास था कि सच्ची शिक्षा के माध्यम से मानवीय मूल्यों को विकसित किया जा सकता है | गाँधी जी के दृष्टि में सच्ची शिक्षा वह है जो मनुष्य के भौतिक एवं आध्यात्मिक पक्षों का अभ्युदय करने में समानरूप से सहायक है | शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जिसका प्रभाव बालक के बौद्धिक चिंतन,साम्यदृष्टिकोण तथा निर्गत व्यवहार में दिखाई पड़ता है | यही उसके आदतों के निर्माण की प्रक्रिया का वाहक है | जिसके द्वारा बालक के ज्ञान, चरित्र तथा व्यवहार को एक विशेष सांचे में ढाला जाता है | गाँधी जी के शब्दों में "तुम्हारी शिक्षा सर्वथा बेकार है यदि उसका निर्माण सत्य और पवित्रता के नीव पर नही हुआ | यदि तुम अपने जीवन के पवित्रता के बारे में सजग नही हुए तो सब व्यर्थ है भले ही तुम महान विद्वान् ही क्यों न हो जाओ" (महात्मा गाँधी -टू द स्टूडेंट, पृष्ट संख्या २३०)

समस्त भारत वर्ष में विद्यालयों की कमी नही है कमी है तो सिर्फ ऐसे विद्या स्थलों की जहां बालक को सामाजिक मूल्यों को जीने का अवसर मिलता हो और सार्वभौमिक करण का संप्रत्यय वहा के वातावरण में जीवनदायानी वायु की भाँती घुला हो बहुसंस्कृति शिक्षा समान अवसरों को सीखने और जीने के लिए एक ऐसा ही नाम है जिसका उद्देश्य बिना किसी आयु, धर्म, जाति, लिंग सीमाओं और संस्कृतियों के परवाह के,प्रत्येक को शिक्षा का समान अवसर प्रदान करता है | जब एक नवजात बालक इस दुनिया में कदम रखता है

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

तो वह पूर्णतः असामाजिक होता है वह न शब्दों की भाषा जनता है और न तो संवेदनाओं की अभिव्यक्ति जो अभी मित्रता और शत्रुता से परे है | उसे रीति रिवाज और परम्पराओं का भी आभास नही होता है , और न ही उसमे किसी आदर्श तथा मूल्य को प्राप्त करने की जिज्ञासा पाई जाती है समावेशी शिक्षा वर्तमान समाज की एक अपरिहार्य आवश्यकता बन गयी है, महात्मा गाँधी मानते थे कि यह वैयक्तिक, पारिवारिक सामाजिक एवं राष्ट्रीय विकास के दृष्टि से अत्यंत्र महत्वपूर्ण है \ उनका मानना था कि बुनियादी विद्यालय विविध प्रकार का विभेदन एवं असमनताओ के कारण हुयी रिक्तियों को भरने में सहायक है |

बुनियादी विद्यालयों की ऐतिहासिक पृष्ठिभूमि – महात्मा गाँधी का भारत में शिक्षा के क्षेत्र में पहला शैक्षिक प्रयोगशाला चंपारण (बिहार) था | निलहे साहबों के अत्याचार के विरुध्द महात्मा गाँधी चंपारण सत्याग्रह (1917) के लिए आये थे, उन्होंने यह अनुभव किया कि शिक्षा के अभाव में अनेक तरह के बुराइयों से जर्जर समाज में राष्ट्रीय पुनर्जागरण या सामाजिक तथा आर्थिक विकास का सपना अधुरा रह जायेगा | उनकी दृष्टि में यह प्रतीत हुआ कि समाज के उन्नयन में स्थायी तरह का काम सही ढंग से ग्रामीण शिक्षा के आभाव में असंभव होगा | इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए महात्मा गाँधी जी ने ग्रामीण विद्यालयों की स्थापना सम्बन्धी योजनाओं को मूर्त रूप देने में संलग्न हो गए उनकी अपेक्षा थी कि , गाँव वाले स्कूल के लिए स्थान तथा शिक्षकों के आवास और भोजन की जिम्मेदारी निभाएंगे | उनकी अपेक्षाए सफलीभूत भी हुयी| सुयोग्य एवं समर्पित शिक्षको की सेवा के लिए उनका ध्यान बम्बई प्रान्त में प्रार्थना समाज, सर्वेंट आफ इंडिया सोसाइटी तथा डेक्कान एजुकेशन सोसाइटी के समर्पित स्वयं सेवकों की तरफ गया | गाँधी जी 8 नवम्बर 1917 को बम्बई प्रान्त (वर्तमान महाराष्ट तथा गुजरात) से शिक्षा प्रेमी एवं सुसंस्कृत कुछ महिलाओं एवं पुरुष स्वयंसेवी शिक्षको के साथ महात्मा गाँधी जी चंपारण लौटे |

पूर्वी चंपारण में ढाका के निकट बरहरवा लखनसेन के उदार दानदाता श्री शिवगुलाम ने अपना मकान प्राथमिक विद्यालय के संचालन के लिए सौप दिए | फलस्वरूप गाँधी जी ने 14 नवम्बर 1917 को बरहरवा लखनसेन में प्रथम प्राथमिक विद्यालय का

शुभारम्भ कराये | इस विद्यालय के देख रेख के लिए यूरोपियन प्रशिक्षण प्राप्त इंजिनियर श्री बबन गोखले एवं उनकी पत्नी श्रीमती अवन्तिका बाई गोखले जो सुशिक्षित शिक्षिका एवं प्रशिक्षित नर्स थी, की सेवाए शिक्षण कार्य के लिए उपलब्ध करायी गयी | गाँधी जी को संबोधित विद्यालय की प्रगति सम्बन्धित अपने प्रतिवेदन में श्री ववन गोखले ने 6 दिसम्बर 1917 को सूचित किया कि छात्र छात्राओं की संख्या 75 हो गयीं है | यह विद्यालय कार्य के साथ स्वच्छता ग्रामीण स्वास्थ की समस्याओं के समाधान तथा सामाजिक संस्कृति में सुधार की ओर समान अभिरुचि रखते थे, अर्थात यह विद्यालय ग्रामीण पुनर्जागरण – कार्यक्रमों को सफल बनाने में अनमोल सहायक हुआ |

पश्चिम चंपारण जिला के मुख्यालय बेतिया से लगभग 40 मील उत्तर -पश्चिम में स्थित भितहरवा गाँव में गाँधी जी ने 20 नवम्बर 1917 को दुसरे प्राथमिक विद्यालय की स्थापना की | इस विद्यालय के संचालन के लिए सामाजिक कार्यकर्ता श्री सदाशिव लक्ष्मण अनुभवी चिकित्सक तथा डॉ० देव , श्री मति कस्तूरबा गाँधी तथा तीन अन्य स्वयं सेवकों की सेवाएँ उपलब्ध करायी गयी | इस विद्यालय के सफल संचालन के दौरान डॉ० मेरिमें देव ने उत्कृष्ट समाज सेवी के उदहारण पेश किये | प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेंन्द्र प्रसाद के शब्दों में "भितिहरवा का स्कूल भवन डॉ0 देव के प्रशंसनीय कार्य स्मारक था" |

सेठ घनश्याम दास के सहयोग से 17 जनवरी 1918 को गाँधी जी ने मधुबन में तीसरे प्राथमिक विद्यालय की स्थापना की | इस विद्यालय का प्रभार श्री नरहरी द्वारिका दास पारिख और उनकी पत्नी श्री मति मणिबाई पारिख, महादेव देसाई पत्नी दुर्गा बाई देसाई , श्रीमती आनंदी बाई को सौपा गया | महात्मा गाँधी के ये तीनों विद्यालय आश्रम की तरह संचालित किये जा रहे थे | गाँधी द्वारा स्थापित इन विद्यालयों का व्यापक शैक्षिक प्रभाव आस पास के गांवों पर भी पड़ा और सामाजिक पुनर्जागरण की भावना का जागरण हुआ| इस प्रयोग की दूरगामी चर्चा करते हुए डॉ० राजेन्द्र प्रसाद (प्रथम राष्ट्रपति भारत) ने अपनी पुस्तक ' चम्पारण में महात्मा गांधी' में स्पष्ट किया कि बुनियादी विद्यालयों का प्रभाव केवल छात्रों पर

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

ही नही पड़ा बल्कि वहां के आस पास में रहने वाले गांवों पर भी पडा,यदि यह काम कुछ दिनों तक और चलता तो बिहार की हालत सुधर जाती |

गांधी जी ने शिक्षा सम्बन्धी अपने विचारों से चम्पारण के तात्कालिक जिलाधिकारी से अवगत कराये| गाँधी जी अपने शैक्षिक प्रयोग के क्रम में चम्पारण जिला के तात्कालिक जिलाधिकारी जे० एल० मेरिमेन को संबोधित 19 नवम्बर 1917 को अपने पत्र में गाँधी ने लिखा कि 'मै आपकी वर्तमान शिक्षा प्रणाली से घबराता हु उसमे बच्चों के नैतिक एवं मानवीय विकास करने के बदले उन्हें कुंठित किया जाता है | वर्तमान प्रणाली की विशेषताओं को ग्रहण करके उसकी जो बुराइयां है उनसे बचने का प्रयत्न करूंगा' गाँधी जी की मान्यता थी कि औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली का जीवन के वास्तविकताओं से कोई सम्बन्ध नही है | बुनियादी शिक्षा नीति के महत्त्व को ध्यान में रखकर बिहार में बुनियादी शिक्षा के प्रचार-प्रसार की ओर समुचित प्राथमिकताये दी गयी | दानदाताओं के सहयोग से लगभग 300 बुनियादी विद्यालयों की स्थापना बिहार तथा झारखण्ड में की गयी | चंपारण में पंडित प्रजापति मिश्र के नेतृत्व मे 25-30 बुनियादी विद्यालय 1939 के पहले स्थापित किये गए, बेतिया के निकट कुमारबाग, बुनियादी विद्यालयों का केंद्र था | जहा गाँधी के नेतृत्व में मई 1939 में कांग्रेस की ओर से एक विशेष सम्मलेन का आयोजन किया गया था | महात्मा गांधी के कुशल नेतृत्व से उत्साहित व्यक्तियों ने बुनियादी विद्यालयों के प्रचार- प्रसार में सराहनी योगदान दिया | गाँधी जी ने अपने शिक्षा का नाम बुनियादी तालीम रखा था| परन्तु बुनियादी का सही मायने में अर्थ क्या है यह हम सब आज भी वास्तविक अर्थो में समझ नही पाए | बुनियादी के अर्थ में हम केवल इतना समझते है कि बच्चे को आरम्भ में देने वाली शिक्षा परन्तु महात्मा गाँधी के अर्थो में इसका इतना ही अर्थ नही है इसके मूल में उनकी जो मंशा रही थी कि देश में प्राथमिक स्तर, माध्यमिक स्तर अथवा उच्च स्तर पर जो भी शिक्षा दी जाय वह समस्त शिक्षा इसी बुनियाद पर खड़ी होगी | सामाजिक समावेशन के रूप में गाँधी यह चाहते थे कि शिक्षा के शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में ग्रामीण एव शहर का कोई अन्तर न हो | गाँधी जी अपने शिक्षा का प्रयोग एक पद्धति के रूप में नही किये थे | इसे

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

उन्होंने एक विचार के रूप में प्रस्तुत किये थे | विनोवा भावे अपनी पुस्तक पुस्तक 'शिक्षण विचार' में लिखते है कि कई शिक्षण पद्धतियाँ पहले हो चुकी है वैसे ही यह एक नयी शिक्षण पद्धति आई है ऐसा सोचना गलत है यह एक विचार है जिस प्रकार भारत को प्राचीन जमाने से ब्रह्म विचार है उसी ब्रह्म विचार से द्वैत, अद्वैत, विशिष्टा द्वैत आदि वैसे ही यह व्यापक शिक्षण विचार है | सामाजिक समावेशन में बुनियादी विद्यालय के शैक्षिक दर्शन के मुख्य तत्व निम्न है |

बाल केन्द्रित शिक्षा – बुनियादी विद्यालय के शैक्षिक दर्शन का एक मात्र विषय बालक है , शिक्षा बालक को प्राप्त करनी है अतः उसे सफल और सार्थक बनाने के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि विद्यालय के प्रत्येक क्रियाकलाप में विद्यार्थी अपने पुरे मनोयोग से सहभागिता करे | विद्यालय का हर दिन का कार्यक्रम क्या हो, उसमे किन बातों को महत्त्व दिया जाय, पाठ्यक्रम के किन पहलुओं पर जोर दिया जाय विभिन्न विषयों और कामों को कितना समय मिले इसका निर्णय बालको की आवश्यकताओं और दिलचस्पियों को सामने रखकर करना होगा | बुनियादी विद्यालय बालक को ग्राहक की दृष्टि से देखती है जिसमे उसके रुचियों पसंदों नापसंदों आवश्यकताओं को समझती है और हर संभव पूरी करने की कोशिश करती है | बुनियादी विद्यालय का समूचा प्रयास बालकों के सर्वांगींण हित के लिए किया जाता है, विद्यार्थियों के मांगो प्रवित्तियों झुकावों और रूचि के आधार पर स्कुल का सारा कार्यक्रम बनाया चलाया जाता है | प्रत्येक बालक एक अनूठा प्राणी है , वैयक्तिक भिन्नता बालकों में उतनी ही पायी जाती है जीतनी वयस्कों में | यह प्रचलित धारणा है कि जन्म पर सब बच्चे एक जैसे होते है, छोड़ देना चाहिए , इसका यह तात्पर्य नही कि बच्चों के परस्पर भेद को समानता का अभाव है, बल्कि यह कि बच्चों के भेद को माना जाय और उन्हें एक प्रकार की शिक्षा देने अथवा इनके साथ एक ही प्रकार का व्यवहार करने की कोशिश न की जाय | बालक एक जीता जगता क्रियाशील जीव है जो किसी न किसी उद्देश्य की सिद्धि में हमेशा लगा रहता है | बुनियादी विद्यालयों में निम्नलिखित शर्तों पर विशेष ध्यान दिया जाता है |

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

- विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को प्राथमिकता के आधार पर मान्यता देना.
- बच्चों को विद्यालय परिवेश में उसके मर्यादा पक्ष को विकसित करते हुए स्नेह प्रदान करना|
- सभी विद्यार्थियों को सामान रूप से अपना समझते हुए उत्साहित, प्रेरित करना परिस्थितियों के अनुसार उन्हें अपने आप को विकसित करने की रचनात्मक क्षमता प्रदान कर अच्छे और बुरे को भेद समझने की क्षमता का विकास करना|

शिक्षा का माध्यम मातृभाषा – अपने मन के भावों की अभिव्यक्ति के साधनों में भाषा सर्वाधिक महत्वपूर्ण है| उसमे भी मातृभाषा का महत्व सर्वोच्च है| क्योकि जिस भाषा का ज्ञान हमे माता के दूध के साथ उपलब्ध होता है उसकी तुलना अन्य भाषाओँ से नही की जा सकती है| इसीलिए गाँधी जी ने प्राथमिक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही माना है|बुनियादी विद्यालय में शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होता है ,मातृभाषा में बालक किसी भी चीज की सहजता, सरलता, स्पष्टता, से सिखता है| इस तथ्य को वैज्ञानिक भी स्वीकार करते है, बालक जब अपनी भाषा में भावनाओं की अभिव्यक्ति करता है तो उसे बड़ी आसानी से कर लेता है| मातृभाषा में पुरवों के चिंतन की सरिता प्रवाहित होती है| जो युगों युगों तक मानव के अन्तःकरण को पवित्र करती रहती है| मातृभाषा में मनुष्य कीं संस्कृति एवं उसकी जातिगत सारी प्रवृत्तियां घुली मिली रहती है| अतएव कहा जा सकता है कि मातृभाषा की समुचित शिक्षा ही सारी शिक्षा की नीव है| बुनियादी शिक्षा के पाठ्यक्रम के अनुसार बच्चों में भाषाई ज्ञान का स्तर निम्नलिखित रूप से होता है –

- विद्यार्थियों को इस योग्य हो जाना चाहिए की वह अपने आसपास की चीजों लोंगों और घटनाओं के बारे में स्वाभाविक रूप से खुल कर और विश्ववास के साथ बातचीत कर सके|
- वह दैनिक काम की किसी भी बात पर साफ- साफ और ठीक- ठीक बोल सके|

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

- गद्य और पद्य दोनों को अर्थ समझते हुए आनंदपूर्वक पढ़ सके | विद्यार्थियों को इस योग्य होना चाहिए कि वे पढ़ाते वक्त निर्जीव और थकान देने वाली बातों को छोड़ दे|
- उसकी लिखावट आसानी से पढ़ी जाए | उसकी लिखने की गति अच्छो हो और लेखन शुद्ध हो |
- रात दिन की घटनाओं और बातों पर साफ साफ स्पष्ट रूप से भाषण कर सके, प्रतिवेदन प्रस्तुत कर सके |

शिल्प अथवा उत्पादक कार्य के द्वारा शिक्षा - शिल्प एक अलग विषय के रूप में नही होता है जो वर्तमान पाठयक्रम में जोड़ा जाए जिससे हमारे शिक्षा सम्बन्धित विचारों में परिवर्तन आये | सवाल यह नही है कि शिल्प को परम्परागत प्रणाली के अंतर्गत शामिल किया जाय | बल्कि शिक्षा के समूचे कार्यक्रम को शिल्प से ओतप्रोत होना चाहिये, बुनियादी विद्यालय में शिल्प अध्यापन का माध्यम होगा | परन्तु सनद रहे कि इसका यह अर्थ नही कि इतिहास, विज्ञान,भाषा, गणित और अन्य विषयों का अध्ययन बंद हो जायेगा| इन विषयों का बड़ा सास्कृतिक मूल्य है जिनकी अवहेलना नही की जा सकती पर उन्हें पढ़ते पढ़ाते समय किसी एक शिल्प से उनका सम्बन्ध जरुँर जोड़ा जायेगा | यह इस करण किया जायेगा शिल्प के काम में ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों को एक साथ कम करने का मौका मिलेगा और बालक ईमानदारी से मेहनत करने का मूल्य समझने लगेगा और साथ ही साथ व्यवहारिक बुद्धि और कुशलता का विकास करेगा| बुनियादी विद्यालय के निम्नलिखित विषय है –

- मातृभाषा
- समाजशास्त्र
- गणित
- समाज विज्ञानं
- कला (चित्रकारी , संगीत आदि)
- हिंदी (जहाँ यह मातृभाषा नही है |)

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

- खेल और शारीरिक व्यायाम

उपर्युक्त विषय निम्न शिल्पों के माध्यम से पढाये जायेंगे –

- कताई और बुनाई
- बागवानी और बाद में खेती
- जिल्स्दाजी जिसमे कागज और गत्ते का कम शामिल है | और बाद में लकड़ी और लोहे का काम |
- चमड़े का काम
- मिट्टी के बर्तन बनाना
- मछली पकड़ना
- घर का काम लड़कियों के लिए |

विद्यार्थियों में श्रम के महत्त्व का ज्ञान – हमारे देश में सामाजिक व्यवस्था हमेशा जात-पाँत के भेदभाव से ओतप्रोत रही है छोटे बड़े व् उंच नीच का भेद जीवन और कार्य के हर क्षेत्र में पैदा होता है और स्वीकार किया जाता | ऊँची जातियों के लोग हाथ से कम नही करते और नीची जातियों के लोग हमेशा करते है इसलिए हाथ का कम निकृष्ट और दिमाग का काम श्रेष्ट समझा जाता है | हाथ का काम करना और हस्तश्रम या मजदूरी करके रोजी कमाना सम्मानित व् शानदार नही ख्याल किया जाता है | चमार, दर्जी, नाई, लुहार धोबी व् सुनार का समाज में वह सम्मान नहीं है जो अध्यापक और क्लर्क का है | चाहे उनके काम में कमाई अधिक हो किन्तु ऊँची जाती के लोग यह कार्य नही करते | परन्तु बुनियादी विद्यालय उत्पादक कार्य के द्वारा ऐसा समाज पैदा करता है जिसमे जाति सम्प्रदाय और रंग से संकुचित भेदभाव न रहे, जहा सब को बराबर सुविधाए मिले और जिसमे सब लोगो से यह आशा की जाए कि वे राष्ट्र और देश की उन्नति और कल्याण के लिए प्रयत्नशील रहे | कोई भी व्यक्ति देश की सेवा कर सकता उसकी सामाजिक स्थति पर नही बल्कि मानसिक और शारीरिक समर्थ पर भी निर्भर रहता है| बुनियादी विद्यालय में मनुष्य की रचनात्मक प्रेंरणाओं को विकास पाने का अवसर मिलता है और हाथ से कुछ काम करना पड़ता है

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

जिससे यंत्रवत नित्यक्रम की नीरसता दूर हो जाती है और और विद्यार्थियों की कुछ करने बनाने और रचने की प्रेरणा मिलती है | बुनियादी विद्यालय में विद्यार्थी अपनी रूचि के अनुसार छोटी मोटी चीजे तैयार करते है| इस प्रकार हम देखते है कि बुनियादी विद्यालय में विद्यार्थी श्रम करता है और श्रम के महत्त्व को भी समझता है |

बुनियादी विद्यालय विश्व शांति में सहायक- ऐसी दुनिया में जहा विभिन्न राष्ट्रों की शक्ति सामूहिक विध्वंस के भीषण यंत्रों के अविष्कार पर अवलंबित हो शांति की बात तर्कहीन नजर आती है| किसी भी राष्ट्र की नीतियों एवं प्रगतियों की सफलता व्यक्तियों के मानसिक और नैतिक स्वभाव पर निर्भर रहती है| वर्तमान शिक्षा पद्दति में जोर व्यक्तिगत सफलता पर है| प्रतियोगिता की अंधाधुंध दौड़ में हर विद्यार्थी को इस बात की ज्यादा चिंता है कि उसका साथी उससे आगे न बढ़ जाएं| परन्तु बुनियादी विद्यालय में शिल्प का कार्य करते हुए छात्र एक दुसरे से मदद मागते है और वे सहज भाव में उनकी आपस में मदद करते है| चाहे वे अलग अलग कक्षाओं व जातियों के हो चाहे उनकी रूचि और सहानुभूति विभिन्न दिशा में ही क्यों न हो परन्तु सारे विद्यार्थी परस्पर सहायता एवं सहयोग का पथ सीखते है | शिल्प के काम में परस्पर सहयोग सहयोग जरुरी और स्वभाविक है और इस कार्य के द्वारा जो परस्पर सहयोग एवं सहानुभूति की भावना उदय होगी वह ऐसे आदर्श सहकारी समाज का बीज बोयेगा जिसमे आक्रमण प्रतिस्पर्धा, शोषण, और दूसरों के अधिकारों का अपहरण असंभव होंगे| एक मौन सामाजिक क्रांति के लिए बुनियादी शिक्षा की पद्धति एक प्रभाव डालेगी| वस्तुत यह शिक्षा पद्दति सत्य और अहिंसा पर अवलंबित है| महात्मा गाँधी की बुनियादी शिक्षा से अभिप्राय यह था कि सच्ची शिक्षा और हिंसा में परस्पर मुलभूत विरोध है, इस शिक्षा पद्दति द्वारा इतना प्रभावित किया जा सकता है कि विद्यार्थी हिंसा और लड़ाई से घृणा करने लगेंगे, अधिकार अपहरण अस्वस्थ प्रतिस्पर्धा और उनके परिणाम स्वरूप घृणा का बहिस्कार हो जायेगा, लड़ाई अधिक दूर और असम्भव होने लगेगी|

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

निष्कर्ष- निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि भारतीय समाज की सबसे बड़ी विशेषता परस्पर निर्भरता और सह अस्तित्व की रही है| और यह विशेषता भारतीय ज्ञान परम्परा का हिस्सा भी रहा है | महात्मा गाँधी बुनियादी शिक्षा कार्यक्रम से एक सामाजिक क्रांति का सपना देखा था| उनके शिक्षा का उद्देश्य गांव के बच्चो को आधुनिक ग्रामीणों में बदलना था, इससे भी महत्वपूर्ण बात यह थी कि बुनियादी शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्तियों को रोजगार के लिए तैयार करना नही था बल्कि व्यक्ति को आत्म निर्भर बनाना था| बुनियादी विद्यालय के द्वारा विद्यार्थियों में सार्थक श्रम तथा श्रम का महत्त्व को विद्यार्थियों के मन मस्तिष्क में आदर की भावना का विकास हो एवं इस शिक्षा के द्वारा समाज में और जाति में बड़े वांछनीय संपर्क और सम्बन्ध पैदा करे साथ में प्रजातान्त्रिक उदेश्यों और आदतों को समझाने और अपनाने के लिए हमेशा तत्पर रहे | इस प्रकार कहा जा सकता है कि बुनियादी विद्यालय सामाजिक समावेशन में महत्वपूर्ण भुनिका निभा सकता है|

Reference

Thakur, A.(2020) Resemblance of Gandhi Nai Taleem in NEP-2020 is unmissable Mahatma Gandhi sought to revamp the education system through Nai Taleem. https://www.thequint.com/news/education/resemblance-of-mahatama-gandhis-nai-talim-in-nep-2020

Panwar, M. (2020) NEP 2020: striving to live Gandhi's idea of rural development. https://timesofindia.indiatimes.com/readersblog/granitic-views/nep-2020-striving-to-live-gandhis-idea-of-rural-development-24771/

Matthew, N. (2020) A deeper look at India New Education Policy 2020. https://www.jurist.org/commentary/2020/08/naina-mathew-india-new-education-policy-2020/

Gupta, P. (2020) Impact of Mahatma Gandhi's Nai Taleem on the New Education Policy 2020: An Analysis. JTER October 2020 volume 7- issue 10 ISSN 2349-5162 . file:///C:/Users/DELL/Downloads/JETIR2010150.pdf

Rukmani, S. (2018) Mahatma Gandhi view on Education . file:///C:/Users/DELL/Downloads/MahatmaGandhiviewsonEducation.pdf

Shah, P.K. (2017) Gandhi view on basic education and its present relevance . Pune research on international journal in English vol.3 issue 4 http://puneresearch.com/media/data/issues/5a07d31f66536.pdf

National Education Policy -2020 Ministry of Human Resource development . government of India.

Tandan, S. (2017) Gandhi's educational thoughts.

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

Joshi, S. (2008) Educational Thoughts of mahatma Gandhi crescent publishing corporation Ansari road Darya Ganj, New Delhi.

https://www.mkgandhi.org/articles/Gandhis-educational-thoughts.html

Bajaj, A. (2020). Finding Nai Talim in the vision of NPE 2020 : exploring the resemblance . IOSR Journal of Humanities and Social Science (IOSR-JHSS) Volume 25, Issue 11, Series 7 (November. 2020) 31-37 e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845 retrieved 17/6/2021

http://iosrjournals.org/iosr-jhss/papers/Vol.25-Issue11/Series-7/D2511073137.pdf

Biswas, K.H. (2021). A study on Gandhi's basic education and its relevance the modern education. International journal of trends in scientific research and development. Volume 5 issue 2 Jan 2021 retrieved 16/6/2021

https://www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd38587.pdf

Panwar, M. (2020) NEP 2020: striving to live Gandhi's idea of rural development.

https://timesofindia.indiatimes.com/readersblog/granitic-views/nep-2020-striving-to-live-gandhis-idea-of-rural-development-24771/

झा, शोभाकांत (2006) , हमारी शिक्षा, बिहार : प्रजापति शैक्षिक विकास एवं समाज उन्नयन संस्था जय प्रकाश नगर बेतिया |

झा, शोभाकांत (1996), प्राथमिक शिक्षा : एक अधययन (पश्चिम चंपारण के सन्दर्भ में) बिहार : प्रजापति शैक्षिक विकास एवं समाज उन्नयन संस्था जय प्रकाश नगर बेतिया |